215

II
अति घार भार मनोज मारए, चान्द रविसिन भाए रे।
पुरुष पाप संताप जत हो, मन मनोभव जान ए॥
जारए मनसिज मार-सर लाधि, चामन देह चौगुन हीधाहि।
सब धाधि आधि बेअधि जाइति, धरिअ धैरज कामिनी।
सुपहु मन्दिर तुरित आओत, सुफल जाइति जामिनी॥
जामिनी सुफल जाइति अवसान, धैरज धरू विद्यापतिमान।
॥४॥

216

माधव, कत परबोधाव राधा।
हा हरि हा हरि कहितहि बेरि-बेरि, अब जिब करब समाधा॥२॥
धरनी धरि धनि जतनहि बइसए, पुनहि उठए नहि पारा।
सहजहि बिरहिनि जग मह तापिनि, बैरि मदन-सर-धारा॥४॥
अरुन नयन नीरें तितल कलेबर, बिलुलित दीरध केसा।
मन्दिर बाहिर करइत संसय सहचरि गन तहि सेसा॥६॥
आनि नलिनि केओ रमनि सुताओलि, केओ देअ मुख पर नीरे।
निसबद पेखि केओ साँस निहारए, केओ देअ मन्द समीरा।
कि कहब खेद भेद जनि अन्तर, घन घन उतपत साँस।
भनई विद्यापति सेहो कलावति, जीब बाँधल आस-पास॥२०॥

हे माधव! राधा को कितनी सांत्वना दें। वह 'हा हरि, हा हरि' कहती हुई बार-बार जीवन को ही समाप्त करने को तुली

क्रमशः

हुई है।

धरती पर वह सुंदरी (कमजोरी के कारण) यत्नपूर्वक बैठती है और इस संसार में समर्थ नहीं हो पाती। वह स्वभाविक रूप से ही विरहिनी है और इस संसार में विरहिणी के लिए बैरी कामदेव की सर-धारा संताप देनेवाली है।

उसकी आँखे आँसुओं से लाल हो गयी है। और आँसुओं से शरीर भींगा हुआ है। बड़े-बड़े केश उलझे हुए हैं। घर से बाहर करते हुए उसकी सखियों को संदेह होता है कि राधा का कहीं अंत ही न हो जाए।

कमल के पत्ते लाकर कोई उसे उसपर सुला रही है और कोई सखी उसके मुख पर जल के छींटे दे रही है। कोई उसे निःशब्द देखकर उसकी साँस को निहार रही है। कोई उसे धीरे-धीरे हवा कर रही है।

उसके क्लेश क्या वर्णन करूँ? जैसे उसका अंतस्तल फटा जा रहा है। विद्यापति कहते हैं कि वह कलावती केवल आशा के पाश से ही बँधी हुई है। (तुम्हारे दर्शन की आशा से ही जीवित है।)

डॉ कल्याण कुमार
हिन्दी-विभाग
एल.के.वी.डी. कॉलेज ताजपुर
समस्तीपुर

कल्याण कुमार